

आध्यात्मिक क्रांति के सूत्रधार – दिगम्बर जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

ई०

वी०के०जैन

(पी०डब्ल्यू०डी०

बनारस)



भौतिकवाद में आकंट डूबी आज की युवापीढ़ी को अध्यात्म की तरफ मोड़ना आसान नहीं था, परन्तु आचार्य श्री के चुंबकीय व्यक्तित्व में न जाने क्या सम्मोहन है कि उच्च शिक्षित एवं संपन्न घराने की युवापीढ़ी भी एक बार उनके अध्यात्मवैभव की झलक पाकर दीवानी हो जाती है। डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, एडवोकेट तक की उच्च शिक्षा प्राप्त लगभग 357 बाल ब्रह्मचारी (अविवाहित) युवक-युवतियाँ आचार्य श्री से दीक्षा लेकर आज पूरे भारतवर्ष में भौतिकवाद के ऊपर अध्यात्मवाद की विजयपताका फहराती हुई विचरण कर रही है, और लगभग इतने ही दीक्षार्थी अभी दीक्षा के लिए प्रार्थनारत/प्रतीक्षारत हैं। यह सचमुच एक कालजयी उपलब्धि है।

दीक्षा के समय से ही आजीवन नमक/मीठा त्याग होने के बाद सन् 1994 से सम्पूर्ण हरी सब्जियों एवं फलों का त्याग करने के उपरान्त अब दूध-दही का भी त्याग— यह सब एक व्यक्ति को अंदर तक पिघला देता है, और व्यक्ति उनको देखकर ही बदल जाता है— भोग से योग की ओर मुड़ जाता है। जैन श्रमण परंपरा के उद्दीयमान नक्षत्र के रूप में आचार्य श्री लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचने के बावजूद आज भी उतने ही सरल, सहज और सरस हैं— हर कोई उनका सामीप्य पाने को तरसता है। अभी पिछले वर्ष जब वे भोपाल में थे तो भारत के प्रधानमंत्री मा० नरेन्द्र मोदीजी भी उनका आशीर्वाद लेने पहुँचे और आशीर्वाद पाने के बाद से वे निरंतर सफलता के पथ पर निर्बाध रूप से आगे बढ़ते हुए विश्व के एक मजबूत राजनेता के रूप में उभर रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी का नारा “सबका साथ—सबका विकास” जैन धर्म के “अनेकांतवाद” पर आधारित है। अनेकांतवाद समाज में सहअस्तित्व और समन्वयवादी दृष्टिकोण की प्रेरणा देता है। अनेकांतवाद सत्य के विभिन्न पहलुओं के रूप में ही समाज के विभिन्न वर्गों की स्वीकार्यता को आगे बढ़ाता है। समाज के हर वर्ग की अहमियत उसके दायरे और दृष्टिकोण में होती है — यही है आचार्य श्री विद्यासागर के उपदेशों का मूल संदेश।

इसके पूर्व भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का सपना साकार करने के लिए मार्गदर्शन पाने योग गुरु बाबा रामदेव जी भी सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में बैठे और अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया। आचार्य श्री ने मन और तन के योग से जीवन को स्वस्थ बनाने के अनमोल सूत्र दिये। आचार्य श्री ने दिगम्बर साधु के प्राकृतिक जीवन को योग का चरम उत्कर्ष बताते हुए आधुनिक कृत्रिम जीवन शैली के खतरों से

सावधान रहने की जरूरत पर बल दिया।

आज राष्ट्र के विकास में भ्रष्टाचार का दीमक लग गया है जो संसाधनों को खाये जा रहा है। दिगम्बर जैन आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने अपनी जीवन शैली से यह दिखाने की कोशिश की है कि आखिर कम से कम कितने संसाधनों और सुविधाओं में जीवन जिया जा सकता है। भ्रष्टाचार के माध्यम से इकट्ठा किया हुआ धन समुद्र के खारे पानी की तरह किसी के काम नहीं आया करता। दिगम्बर मुनि विद्यासागर जी ने इस पंचमकाल में भी चतुर्थकाल की मुनिचर्या के आचरण से जो महिमा संपूर्ण भारतवर्ष में बिखेरी है, उससे दिगम्बर साधुओं की कठोर साधना और असीमज्ञान के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव सम्पूर्ण जैन ही नहीं— जैनेतर समाज में भी जागृत हुआ है— ये इस सदी की अनन्यतम घटना ही मानी जाएगी। दिगम्बर साधु चिलचिलाती गर्मी और कड़कड़ाती ठण्ड में भी बिना वस्त्र के रहते हैं, आजीवन नंगे पैर पैदल ही चलते हैं, 24 घंटे में सिर्फ एक बार शुद्धतापूर्वक अन्न—जल ग्रहण करते हैं, समय—समय पर अपने हाथों से दाढ़ी—मूँछ और सिर के बालों का लोंचन कर शरीर के प्रति निर्ममत्व के लिए अपनी परीक्षा देते रहते हैं। निश्चित ही ऐसे अपरिग्रही संतों का जीवन आज के भौतिकवाद के लिए एक बड़ी चुनौती से कम नहीं है।

कठोर साधना ही नहीं, दिगम्बर आचार्य विद्यासागर जी महाराज को प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, बंगला इत्यादि अनेक भाषाओं पर भी अधिकार प्राप्त है। विभिन्न भाषाओं में पारंगत आचार्य श्री द्वारा सृजित विशाल साहित्य युगो—युगों तक आने वाली पीढ़ी को साहित्य के अध्यात्म रस में सराबोर करता रहेगा। आचार्य श्री द्वारा सृजित “मूकमाटी” महाकाव्य पर तो विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनेकों पी.एच.डी. की जा चुकी है। रचना करते समय इनके शब्द नाना अर्थों के अनुरूप इस प्रकार नर्तन करते हैं, मानों रिमोट कंट्रोल से संचालित हो रहे हों। शब्दों को व्युत्पत्ति बल से नवीन अर्थ प्रदान करना आपके साहित्य सृजन की विशेषता है।

समाज से दूर रहकर भी समाज की हर आवश्यकता पर इनकी निगाह रहती है। कन्याओं के लिए संस्कारों के साथ उच्चस्तरीय शिक्षा हेतु अलग—अलग जगहों में “प्रतिभास्थली” की स्थापना के साथ युवकों के लिए गुरुकुल परंपरा को पुनर्जीवित करना, निरीह पशुओं के पालन पोषण हेतु शताधिक गौशालाएं खोलना, पशुधन को संरक्षित और सवर्धित करने के लिए “मांस निर्यात निषेध” का अभियान चलाना, बच्चों को शाकाहार के प्रति जागरूक बनाने हेतु शाकाहार — क्रांति का सूत्रपात करना, पर्यावरण को बचाने के लिए जैविक खाद और शांतिधारा दुग्ध योजना को बढ़ावा देना, चिकित्सा के द्वारा मानव सेवा के क्षेत्र में भाग्योदय तीर्थ का विकास करना, भारतीय संस्कृति की पहचान सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उच्चशिक्षित त्यागी व्रतियों द्वारा चरखा उद्योग को प्रोत्साहन देना, जैन संस्कृति की अक्षुण्णता और महानता को बनाए रखने वाले अमरकंटक, कुंडलपुर, डोंगरगढ़ इत्यादि अनेक

जगहों पर विशाल तीर्थों का विकास करना—कहां तक गिनाए— हर क्षेत्र में—हर वर्ग के कल्याण की चिन्ता रहती है— इन महामनीषि को। पता नहीं— इतनी ऊर्जा इनमें आती कहां से है— नीरस एवं शुष्क और वह भी अल्प—आहार लेकर — यह आधुनिक चिकित्साविज्ञान के लिए एक रहस्य एवं शोध का विषय बन गया है।

सचमुच हम अत्यन्त भाग्यशाली हैं कि अपने जीवनकाल में एक ऐसे युग दृष्टा संत पुरुष को देख पा रहे हैं, जिन्हें आने वाला युग एक विस्मयकारी इतिहास के रूप में जानेगा। वर्तमान में शायद ही कोई संत इस धरा पर हो, जिन्होंने आत्मकल्याण और लोक कल्याण — दोनों क्षेत्रों में एक साथ इतनी ऊँचाइयों को प्राप्त किया हो। उल्लेखनीय है कि ऐसे महातपस्वी आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज की 50वीं दीक्षा जयन्ती पूरा देश 28 जून 2017 को “संयम महोत्सव” के रूप में मना रहा है।



आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की 50वीं दीक्षा जयन्ती को यादगार बनाने का सुनहरा अवसर

बड़े सौभाग्य की बात है कि हम अपने जीवन काल में एक ऐसे सन्त की 50वीं दीक्षा जयन्ती मना रहे हैं जिनकी त्याग—तपस्या के बारे में सुनकर ही मन द्रवीभूत हो जाता है। क्यों न हम भी ऐसे निमित्त का लाभ उठाकर खुद भी उस रास्ते पर एक कदम बढ़ाते हुए निम्न सूची में कोई एक या अधिक नियम लेकर अपने जीवन में इस दीक्षा जयन्ती को एक यादगार पल बनायें। नियम कम से कम एक वर्ष के लिए होना चाहिए क्योंकि यह दीक्षा जयन्ती भी “संयम वर्ष” के रूप में विविध आयोजनों के साथ पूरे वर्ष भर मनायी जा रही है।

1. जब तक वाराणसी में हैं — दिन में कभी भी समय पाकर एक बार देव दर्शन

अवश्य करना।

2. जब तक वाराणसी में हैं – रात्रि भोजन नहीं करना।

3. अपने घर की रसोई में अनछने पानी का प्रयोग नहीं करना।

4. ऑफिस/दुकान/घर में जब भी समय मिले – 24 घंटे में आधा घंटा स्वाध्याय अवश्य करना।

5. सप्ताह में भाव भक्तिपूर्वक एक दिन पूजन/अभिषेक करना।

6. प्रतिदिन एक माला णमोकार मंत्र की करना।

7. सप्ताह में एक बार घर में आधा घंटा णमोकार मंत्र का पाठ एवं परिवारजनों के साथ धर्म चर्चा करना।

8. वर्ष में कम से कम एक बार तीर्थ यात्रा अवश्य करना।

9. वर्ष में कम से कम तीन बार मुनि/आर्यिका को आहार दान अवश्य करना।

10. गुटखा/सिगरेट/पान की खपत को आधा कर देना।

11. खाने में ऊपर से नमक लेने का त्याग।

12. 24 घंटे में तीन बार से ज्यादा ठोस पदार्थ से मुँह जूठा करने का त्याग।

13. 24 घंटे में एक/दो/तीन घंटे से अधिक टी.वी. नहीं देखना।

14. अष्टमी/चतुदर्शी के दिन बाजार की बनी चीजें नहीं खाना।

15. लिपिस्टिक एवं नेलपालिश का त्याग।

16. अष्टमी/चतुदर्शी के दिन रात्रि में चारों प्रकार के आहार का त्याग।

17. अष्टमी/चतुदर्शी के दिन कॉस्मेटिक्स पदार्थों का त्याग।

18. चमड़े की वस्तु का प्रयोग नहीं करना।

19. सप्ताह में कम से कम एक मांसाहारी व्यक्ति को शाकाहारी बनाने का प्रयास करना।

20. महीने में एक दिन अस्पताल जाकर जरूरतमंद की सहायता करना।

21. महीने में एक दिन नवदेवता रूप जिनमंदिर में जाकर वैयावृत्ति के रूप में साफ-सफाई करना।

हे गुरुवर! ऊपर अंकित क्रम संख्या का नियम एक वर्ष के लिए ले रहा/रही हूँ – मुझे नियम का अतिचार रहित पालन करने की शक्ति देना ताकि आगे भी नियम लेने का उत्साह बढ़ता रहे – नाम –
पिता/पति का नाम –
मोबाइल नं –